शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

मुगलकाल में फारसी प्रभाव का ऐतिहासिक विश्लेषण

अमित कुमार सिंह
अस्सिस्टेंट प्रोफेसर
इतिहास विभाग
देव समाज कॉलेज फॉर वीमेन.
फिरोजपुर, पंजाब, भारत

शोध-संक्षेप

मुगल शासकों में अकबर का स्थान उसके अभिनव प्रयोगों के कारण शीर्षस्थ है। शिक्षा के इस्लामी ढाँचे से मुक्त रहना इस सम्राट के उदारवादी दृष्टिकोण के विकास का अवसर सिद्ध हुआ। अकबर पर फारसी प्रभाव था इस विषय पर बहुत सीमित शोध हुआ है। इस शोध पत्र में उन तत्वों का विश्लेषण किया गया है जो अकबर की नीतियों में जरथुस्थ के धार्मिक प्रभाव से उत्पन्न हुई थी।जरथुस्थ्रजिसे कभी जर्मन दार्शनिक नीत्शे ने एक नाचते रहस्यदर्शी का विशेषण दिया था, उनका मुगल नीतियों पर प्रभाव का विश्लेषण व आकलन निश्चय ही रोचक और नवीन हैं।

मुख्य शब्द - जरथुस्थ . अकबर, दस्तूर जी मेहर जी राणा, फारसी प्रभाव , नौसारी

प्रस्तावना

फारस में जेंदावेस्ता की रचना हुई। भारत में ऋगवेद का सृजन हुआ। ऋगवेद की ऋचाओं ने भारतीय संस्कृति व सभ्यता को आकार दिया और जेंदावेस्ता ने फारस की सांस्कृतिक अद्वितीयता को साकार किया। आर्य आये तो मध्य एशिया से लेकिन उन्होंने दो पृथक समूहों ने दो सामान्तर महान सभ्यताओं को जन्म दिया - भारत और फारस या ईरान. फारस के आध्यात्मिक उन्नायक हैं। जरथुस्थ जिन्होंने जगत के दो पृथक शक्तियों का सिद्धांत दिया , स्पेन्टा मैन्यु और अंगरा मैन्यु जो क्रमशः सकारात्मक व नकारात्मक ऊर्जा के द्योतक हैं और ये दोनों शक्तियां ईश्वर के अधीन कार्य करती हैं और वह ईश्वर है अहुर माजदा। फारसियों ने फारस में ससानिद वंश की आधारशिला रखी और सदियों तक शासन किया। ससानिद शासकों ने जरथुस्थ धर्म को संरक्षण प्रदान किया।

भारत में इस धार्मिक आन्दोलन का प्रादुर्भाव फारसी व्यापारियों द्वारा होता है। भारत प्राचीन काल से अपनी समृद्धि के लिए विख्यात था और इसके साथ विदेशी व्यापार ने फारसियों को खूब समृद्धि प्रदान की। आज भी फारसी समुदाय अपनी आर्थिक समृद्धि के कारण जाना जाता है और इसका एक विशाल तबका व्यापार में संलग्न है। ऐसे ही पुश्तैनी फारसी व्यापारियों का एक समूह दक्षिण भारत में आ बसा और यहीं से प्रारंभ होती है वह कथा जिसने अकबर व उसकी नीतियों पर गहन प्रभाव डाला।

भारत में जरथुस्थ का प्रभाव

कुछ फारसी पैगम्बर मोहम्मद के प्रभाव में खुरासान विस्थापित हुए और गुजरात के दीव में आकर बस गए। वहां के स्थानीय शासक जादी

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

राणा से अनुमति प्राप्त कर उन्होंने गुजरात के संजान नगर को अपनी व्यापारिक गतिविधियों का केंद्र बनाया। संजान में उन्हें बसने की अनुमति सशर्त प्राप्त हुई थी। फारसी वहां कोई हथियार नहीं रख सकते थे और उन्हें स्थानीय परम्पराओं व संस्कृति को अपनाना अनिवार्य था। उन्हें अपने त्यौहार सूर्यास्त के पश्चात मनाये जाने की अनुमति थी। स्थानीय शासक जैसे-जैसे फारसियों की सांस्कृतिक विरासत से परिचित होते गए उन्हें और रियायते मिलने लगीं। 11वीं सदी तक फारसियों की भारत में इतनी सुदृढ़ स्थिति हो चुकी थी कि उन्होंने स्थानीय राजा को कर देने से मना कर दिया। विवश होकर राजा को बलप्रयोग कर उन्हें कर देने को बाध्य करना पड़ा। भारत में फारसियों को वास्तविक शक्ति तब प्राप्त हुई जब दस्तूर जी मेहर जी राणा की अकबर के दरबार में प्रतिष्ठा स्थापित हुई। भविष्य में एक अन्य रसूखदार फारसी दोरजी ने जहाँगीर के दरबार में अपना स्थान बनाया। यूरोपियनों के भारत में आगमन के पश्चात फारसियों की स्थिति एक व्यापारिक मध्यस्थ की हो गयी। सन 1320 में एक फ्रांसीसी मिशीनरी जोर्डन यू. एस. ने फारसियों के सन्दर्भ में लिखा- "फारसी लोग अग्नि की पूजा करते थे और अपने समुदाय के मृतक शवों को खुले में छोड़ देते थे'। सन 1615 में एडवर्ड टेरी ने लिखा "फारसी एक ईश्वर में विश्वास करते हैं और यह सोचते हैं कि इसी ईश्वर ने जगत में सभी चीजों का निर्माण किया है। एडवर्ड टेरी प्रथम यूरोपीय था, जिसने फारसी संस्कृति को पश्चिम जगत से परिचित कराया।

पारसी धर्म का भारत में प्रसार

पारसियों ने गुजरात में अपने धर्म के प्रसार हेतु अनेक अग्नि मंदिरों के निर्माण किया। बारहवी शताब्दी तक फारसियों का प्रसार गुजरात में काठियावाड़ के वडनेर , भड़ौच, वारिव, अंकलेश्वर, कैम्बे और नवसारी तक हो चुका था। फारसियों का पहला भारतीय मौन मंदिर या दकमा भड़ौच में स्थापित हुआ। स्थानीय फारसियों की धार्मिक परम्पराओं के निर्वहन के लिए शीघ्र ही दो और दकमे भड़ौच में ही स्थापित हुए। कालांतर में ईरानियों ने अपने धर्म का व्यापक प्रसार किया और शीघ्र ही गुजरात के पांच प्रमुख जनपद फारसी धर्म के प्रमुख केंद्र के तौर पर विकसित हो चुके थे। संजान में एक भव्य अग्नि मंदिर का निर्माण किया गया। सन 1740 में नवसारी में स्थापित एक भव्यतम अग्नि मंदिर आज भी मौजूद है। सन 1972 ई. में गुजरात के फारसी समुदाय ने संजान के अग्नि मंदिर का स्थापना दिवस मनाया और फारस के तत्कालीन शाह अतश बकरम को अपनी कृतज्ञता ज्ञापित की। सन 1572 ई. में अकबर ने गुजरात को मुगल साम्राज्य में मिला लिया और फारसियों को , जो उस समय तक गुजरात में पूरी तरह स्थापित हो चुके थे, अपना संरक्षण प्रदान किया। फारसियों ने मुगलों के संरक्षण में खूब विकास किया और 19 वी शताब्दी तक आते आते बम्बई फारसी समुदाय के प्रमुख केंद्र के रूप में स्थापित हो चुका था।

अकबर पर फारसी प्रभाव

अकबर अपनी अनूठी धार्मिक दृष्टि के कारण विख्यात है। मजहर की घोषणा और इबादतखाना का निर्माण उसके लचीले , उदार तथा सहिष्णु धार्मिक दृष्टिकोण के प्रमाण हैं। हालाँकि इबादतखाना जैसा प्रयोग तुर्की शासक मुहम्मद बिन तुगलक भी अपने शासनकाल में कर चुका था, लेकिन उसकी राजनैतिक नीतियों पर इसका इतना व्यापक प्रभाव दृष्टिगोचर नहीं होता है ,

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जुलाई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

जितना कि अकबर का। अकबर के दृष्टिकोण में वातायन का निर्माण संभवतः हुमायूं की अस्थिर स्थिति का परिणाम था, क्योंकि अकबर के जन्म जहाँ एक हिन्दू राजा राणा बीसलदेव के महल में हुआ, वहीं इसका पालन -पोषण विभिन्न प्रतिकूलताओं में हुआ जिससे वह संकुचित इस्लामिक कट्टरवाद से बचा रहा। अकबर अपने शासनकाल में विभिन्न आध्यात्मिक चर्चाओं व प्रयोगों से गुजरा और अंततः उसने सभी धर्मो के समन्वय का प्रयास किया और एक नवीन धर्म का सृजन किया, जिसे हेनरी ब्लोक्मेन ने 'दीन ए इलाही' की संज्ञा दी लेकिन इसका वस्तुतः नाम था तौहीद ए इलाही जिसका शाब्दिक अर्थ है दिव्य अद्वैतवाद। एक सम्राट से एक धर्मगुरु की भूमिका में अकबर की सहिष्णुता का इससे बढ़कर कोई प्रमाण नहीं हो सकता कि उसने अपने नव-निर्मित धर्म का अनुगमन करने के लिए किसी को कभी भी बाध्य नहीं किया। यहाँ तक कि उसके नौ-रत्नों में मात्र एक बीरबल ने ही तौहीद ए इलाही की दीक्षा ली थी और अकबर के जीवन काल में इसके कुल अनुयायियों की संख्या कभी भी 18 से ऊपर नहीं गयी।

प्रोफेसर विसेंट स्मिथ अनुसार अकबर के ऊपर फारसी प्रभाव उसके गुजरात विजय के पश्चात दृष्टिगोचर होता है। गुजरात में फारसी संस्कृति व आध्यात्मिक मूल्यों के प्रभाव में अकबर नौसारी से फारसी धर्मगुरु दस्तूर जी मेहर जी राणा को अपनी राजधानी आगरा में आमंत्रित करता है, जो अपने अनेक अनुयायियों के साथ अकबर के दरबार में हाजिर होते हैं। दस्तूर जी मेहर जी राणा से अकबर के तमाम -विमर्श के पश्चात अकबर उनकी आध्यात्मिक परम्पराओं को अमली जामा पहनाने का भी प्रयास करता है और जरथ्रुस्थ धर्म की कुस्ती और पवित्र धागा अपनी कलाई में बांधना शुरू कर देता है। यह पवित्र धागा एक दिन में अनेक बार बांधा व खोला जाता था और इसे बांधते वक्त फारसी धर्मगुरु एक विशेष आध्यात्मिक मन्त्र का उच्चारण करते और पवित्र अग्नि की तरफ अभिमुख होकर ही यह कर्मकांड सम्पन्न किया जाता था।

आईने अकबरी के अंग्रेजी अनुवादक ब्लोक्मेन के अनुसार-'वे (फारसी) अग्नि पूजा को महान पूजा घोषित करते और अकबर को इतना प्रभावित रखते कि अकबर के महल में पवित्र अग्नि अहर्निश प्रज्वलित रहनी चाहिए और अकबर को फारसियों के सनातन आध्यात्मिक मूल्यों से सीखना व लाभान्वित होना चाहिए। वे कहते कि फारसी सम्राट के महल में भी पवित्र अग्नि अहर्निश प्रज्वलित रहती थी अतः आज वह विश्व में सबसे महान सम्राट माना जाता है। अकबर को यह बताया गया कि पवित्र अग्नि ईश्वर के आभा की अभिव्यक्ति है। हालाँकि अकबर अपनी युवा अवस्था से ही अपनी हरम की हिन्दू रानी के प्रति स्नेह के प्रकटीकरण के लिए होम किया करता था।'

अकबर ने फारसियों के ऊपर से जजिया हटा लिया और उन्हें तीर्थयात्रा कर में भी रियायत देते हुए उनके लिए समान नागरिक संहिता लागू कर दी। हालांकि कुछ इतिहासकार यह भी दावा करते हैं कि अकबर फारसी धर्म में दीक्षित भी हो चुका था, लेकिन इस बात के पुख्ता सबूत अत्यंत ही सीमित हैं।

अकबर के विश्वास में फारसी संपर्क के कारण जो महानतम विकास परिलक्षित होता है वह है 'सूर्य के प्रति उसके सम्मान का विकास।' अकबर ने अपने नवीन धर्म तौहीद ए इलाहीका केन्द्रीय तत्व सूर्य को ही बनाया। इतिहासकार विसेंट

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जुलाई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

आर्थर के अनुसार - 'यह फारसी अनुगमन व प्रसार वस्तुतः हिन्दू राजा बीरबल के सहयोग व समर्थन का प्रतिफल था। बीरबल सूर्यदेव के उपासक तो थे ही साथ ही साथ हवन/होम आदि नियमित किया करते थे। कुछ वर्षों के बाद अकबर ने फारसी महीने व दिन के नाम अपना लिए और 14 फारसी त्योहारों को मनाने लगा। वह पारसी धर्म में दीक्षित होने से इसलिए वंचित रहा क्योंकि अकबर ऐसे गहन प्रयोग अन्य धर्मों के साथ भी कर रहा था और हर धर्म की दीक्षा लेना उचित नहीं था।'

फारसी धर्मगुरु दस्तूर मेहर जी राणा के प्रति अकबर का इतना सम्मान था की उन्होंने उन्हें 1579 ई. में 200 बीघा जमीन दान कर दी। सन 1591 ई. में दस्तूर मेहर जी राणा के मृत्यु के पश्चात और 100 बीघा जमीन उनके पुत्रों को दान में दिया गया। सन 1580 ई. के बाद अकबर ने अपने दरबार में सूर्य व अग्नि की पूजा को अनिवार्य घोषित कर दिया। अकबर ने अपने लाहौर के दरबार में महान फारसी लेखक अरदशीर को आमंत्रित किया ताकि वे एक फारसी शब्दकोश के निर्माण में मीर जमालुद्दीन को प्रशिक्षित करें। यह फारसी शब्दकोश अकबर के मृत्यु के पश्चात 1608 में फरहंग ए जहाँगीरी नाम से प्रकाशित हुआ।

दस्तूर मेहर जी राणा और अकबर के मध्य धार्मिक वाद-विवाद में दो अन्य फारसी संत मेहर जी वाचा और मेहरवैद भी सहभागी होते थे। अकबर ने अपने दरबारी इतिहासकार व अपने नवीन धर्म तौहीद ए इलाही के एक मात्र पुरोहित अबुल फजल को आदेश दिया की शाही महल में पवित्र अग्नि को स्थापित किया जाय और निरंतर प्रज्वलित रखा जाय। एक बार अपराह्न अकबर अपने महल में आया और पाया की पवित्र अग्नि बुझी हुई है। क्रोध में उसने पवित्र अग्नि के पात्र को महल से बाहर फेंक दिया। अकबर के धार्मिक विचारों में जहाँ एक तरफ फारसी धर्म ने महत्वपूर्ण प्रभाव डाला वहीं एक अनूठे रहस्यवाद को भी जन्म दिया। इस रहस्यवाद की झलक दबिस्तान ए मजाहिब में संकलित है। अकबर के बाद भी मुगल नीतियों पर फारसी प्रभाव बदस्तूर हावी रहा। जहाँगीर ने अपने पुत्रों का नामकरण फारसी बादशाहों के नाम पर किया जैसे खुसरो , खुर्रम, जहानदार, शहरयार और होशंद। अपनी पिता की तरह जहाँगीर ने भी फारसी विद्वानों को भूदान जारी रखा जिनमे प्रमुख संत थे मेहर जी कामदिना और होशंग रणजी। औरंगजेब के काल में एक फारसी लेखक मुहसिन फानी ने एक महत्वपूर्ण पुस्तक दबिस्तान ए मजाहिब की रचना की जिसमे उन्होंने तत्कालीन भारत में प्रचलित धर्मो का बारीकी से विश्लेषण किया है।

निष्कर्ष

यह सत्य है की अकबर की नीतियों पर अनेक धर्मो का प्रभाव था, लेकिन फारसी धर्म के प्रभाव की व्यापकता थी। अबुल फजल के द्वारा जब मुगल राजत्व को दैवी जामा पहनाया गया और अकबर को फर्र ए इज्दी की उपाधि प्रदान की गयी जिसका शाब्दिक अर्थ है ईश्वर का प्रकाश , तो इसके पीछे पवित्र अग्नि व सूर्य पूजा से सम्बंधित फारसी दिव्यता की धारणा थी। फारसी राजव्यवस्था की धाक तो समकालीन जगत में खूब थी , और सल्तनत से लेकर मुगल सभी राजवंशों ने उन्हें अपनाने का प्रयास किया, लेकिन अकबर एकमात्र सम्राट है , समूचे इतिहास का , जिसने फारसी आध्यात्मिक पहलुओं पर व्यक्तिगत शोध करते हुए इसकी उपादेयता को अनुभव करने का प्रयास किया। संक्षेप में कहे तो

अकबर कालीन मुगल राजव्यवस्था , धार्मिक निर्णय, प्रशासनिक कर्तव्य, रीति- रिवाज , मुगल संस्कृति, मुगल वंशावली , जीवन शैली , मुगल राजत्व का सिद्धांत , दीन ए इलाही , आदि अनेक पहलू जरथ्रुस्थ से गहनता से प्रभावित हुए , और इसका दूरगामी परिणाम भारत की सभ्यता और संस्कृति पर भी पड़ा और आज तक जारी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 अय्यर, मीना, जरथ्रुस्थ की आस्था व उनका दर्शन , दिल्लीः कल्पज प्रकाशन, 2009

2 एडवर्ड, स्टीफेन मेरेडिथ, मुगल रूल इन इंडिया , नयी दिल्लीः अटलांटिक पब्लिशर, 1995

3 अलामी, अबुल फजल, आईने अकबरी, (एच. ब्लोक्मेन और कर्नल एच.एस. जर्रेट द्वारा अनुवादित). कलकत्ताः एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल ; 1873-1907

4 बेग, मिर्जा आसिफ. जोरास्ट्रियन इन मुगल कोर्टरू ए शोर्ट स्टडी ऑफ पारसीज एंड देयर राईज इन मुगल कोर्ट, दिल्लीः विपुल प्रकाशन, 2004

5 बोयस, मैरी, जोरास्ट्रियन:द रिलीजियस बिलिफ एंड प्रक्टिस , लन्दनः रोल्ज एंड केगन पाल लिमिटेड, 1993

6 ब्लेक, स्टीफन, पी.,टाइम्स इन अर्ली मॉडर्न इस्लाम , न्युयोर्कः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 2013

7 हर्ट्ज, पाउला आर. ,जोरास्त्रियनिज्म ,न्यूयॉर्कः इन्फोबेस प्रकाशन, 1999

8 कैप्टेन, मेथ्यु टी. ,द प्रेजेंस ऑफ लाइट , लन्दनः शिकागो यूनिवर्सिटी प्रेस लिमिटेड, 2004

9 पी एम् होल्ट, अन्न के एस , लम्ब्कोन, बर्नार्ड लेविस, द कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इस्लाम , यु. के.ः द प्रेस सिंडिकेट ऑफ यूनिवर्सिटी ऑफ कम्ब्रिज, 1970

10 पल्सेतिया, जेसी एस. द पारसीज ऑफ इंडिया प्रेजर्वेशन ऑफ आइडेंटिटी इन बॉम्बे सिटी , कतरः ब्रिल प्रकाशन ;2001

11 सिंह, के एस., गुजरात. मुंबईः पापुलर प्रकाशन, 2002

12 स्मिथ, विसेंट आर्थर, अकबर द ग्रेट मुगल, लन्दनः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1917

13 स्पीयर, पर्सीवेल, भारत का इतिहास , नई दिल्लीः पेंग्विनय, 1965

14 स्वेन, एस. हार्टमन, पार्सिस्मः द रिलिजन ऑफ जोरास्टर, नीदरलैंडः ई जे ब्रिल, लेडन, 1980,

15 साराह, स्टेवार्ट, द एवरलास्टिंग फ्लेम, जोरोअस्त्रियन इन हिस्ट्री एंड इमजिनेशन, न्यूयॉर्कः आई. बी. टूरिस एंड कंपनी लिमिटेड, 2013

16 टक, पैट्रिक, द ईस्ट इण्डिया कंपनी , 1600-1658, न्युयोर्कः रौल्ज प्रकाशन, 1999

ज़र्नल

17 स्वेन एस. हार्टमेन , पार्सिज्म, द रिलिजन ऑफ जोरोस्टर, अल-अदवा, 42:29